दाने–दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम

किसी गॉव में एक सेठ जो कि महा कंजूस था घर के बाहर बैठा था और उसी समय एक साधू भिक्षा मॉगने आता है तो वह सेठ कुछ भी देने के लिए मना करता है तब साधू उससे कहता है कि आपके पास इतना धन है तो कुछ दान करना चाहिए, आपका भला होगा, सेठ बोलता है कि तुम्हारे जैसे हमारा क्या भला करेंगें तुमसे अपना तो भला किया नहीं जाता,तब वह साधू कहता है कि दान करने से कुछ कम थोड़े ही हो जायेगा,सेठ बोलता है कि ये धन ऐसे ही इकट्ठा नहीं हो जाता, बूँद –बूँद इकट्ठा करना पड़ता है! अरे सेठ जी तुम दो या न दो पर अगर मेरे हिस्से का होगा तो हमें मिल ही जायेगा, दाने–दाने पर लिखा होता है खाने वाले का नाम,किसी के भाग्य का कोई ले ही नहीं सकता,उसी जगह एक छोटी सी चिड़िया दाना चुग रही थी, उसका एक दाना उठाकर सेठ खा लेता है और कहता है कि अगर हम इसके हिस्से का खा लेंगें तो इसको कहॉ से मिलेगा, खाते ही सेठ को गले में खाना अटकने की वजह से खॉसी आ गई और वह दाना बाहर निकल कर गिर गया, गिरते ही चिड़िया ने खा लिया, साधू ने कहा देखा ! सेठ जी दाने–दाने पर लिखा होता है खाने वाले का नाम। इससे हमें दो बातों की शिक्षा मिलती है, जो हमने कर्म से अपना भाग्य बनाया है उससे कोई हमें वंचित नहीं कर सकता और हमें संग्रह भी नहीं करना चाहिए,एक बार हमने पढ़ा था कि अगर हम अपना काम खुद नहीं करते तो हम संसार की गतिशीलता को स्लो करते हैं क्योंकि हमारे काम को कोई और करेगा, इसी प्रकार अगर हम जीवन निर्वाह से अधिक संग्रह करते हैं और किसी को खाने को भी नहीं मिल रहा, तो हम किसी का हिस्सा हड़प कर रखे हुए हैं जैसे चाहे पॉडव भवन हो या शान्तिवन जब हॉल में पार्टियॉ रूकती थी, तो कई लोग स्नान करने जाते थे तो बाल्टियों में अपने कपड़े भिगों कर, अपनी चारपाई के नीचे रख लेते थे और बाद में स्नान करने वाले इधर–उधर बाल्टी ढूढ़ते फिरते परेशान होते थे, बिना बाल्टी के ही जैसे तैसे स्नान करते, कई लोग तो हॉल में चारपाई के नीचे बॉल्टी देख बहुत गुस्सा भी करते थे, इससे मधुबन में जाकर भी बद्दुआ ही कमा कर आते, फिर कहते कुछ खास अनुभव तो हुआ नहीं, इसी प्रकार किसी अन्य प्रोग्राम या बाबा मिलन में कई लोग अपने साथियों के लिए जगह या कुर्सी रोक कर रखते हैं, जिससे खाली कुर्सी या जगह देख कर सब बैठने चलते, वो सबको मना करते रहते, कुछ अशारीरी अवस्था या साइलेन्स में रहते

नहीं और जब वो आते हैं तो आपस में फिर बातें करते रहते और जगह को रोकने की अपनी बहादुरी का बखान करते रहते,और कई बार तो जिनके लिए जगह रखी होती वो आते भी नहीं, तो व्यर्थ में ही सारा समय व एनर्जी लगाया और सबके संकल्प अलग चलवाये, इसलिए कोई भी किसी प्रकार का एकस्ट्रा संग्रह नहीं करना चाहिए। दूसरी बात जो हमें सीखने को मिलती वो कि अगर हमें कभी असफलता मिलती भी है तो कोई चिन्तन क्यों ? हमारा भाग्य हमारे कर्मों से ही बना है, अच्छे कर्मों का फल अच्छा ही होगा, उसको कोई बुरे में परिवर्तन न ही कर सकता, न ही किसी से करवा ही सकता है, जो भी होगा वो हमारा अपना किया ही सामने आयेगा,इसलिए भले ही कई बार सामने से लग सकता है कि इसके वजह से हमें ये अवसर नहीं मिला या इनके कारण हमारा ये नुकसान हो गया,पर नहीं हमें इस बात से निश्चिन्त रहना चाहिए कि कोई किसी का भाग्य नहीं लिखता, यहाँ तक कि बाबा भी कहते कि भाग्य बनाने की कला मैं सिखलाता हूँ पर बनाने की कलम तो मैं तुम्हें खुद ही दे देता हूँ जैसे चाहो वैसे अपना भाग्य बना लो, फिर हमें या किसी को दोष न देना,तो हमने ही अपना भाग्य बनाया है अपना भाग्य हम बनायें या बिगाड़ें ये सिर्फ मेरे हाथ में है, तो सदा सबको निर्दोष समझ निश्चिन्त रहना चाहिए।

दाने–दाने पर लिखा होता है खाने वाले का नाम,तभी तो आयात व निर्यात का काम होता है,पैदा कहाँ होता है और खाया कहाँ–कहाँ जाता है, और कई बार आपने देखा होगा कि हमने अपने खाने के लिए ही बनाया या रखा होगा और हमें भूख भी जोरों की लगी होगी, पर कोई ऐसा कारण बन जायेगा जो हम वो खा नहीं पायेंगें और वह किसी और को मिल जाता है,हमने तो अपने लिए ही सोचकर रखा था पर वो था किसी और का इसलिए उसे मिल गया।

दाने–दाने पर लिखा होता है खाने वाले का नाम,इसलिए यज्ञ के एक–एक दाने को बड़ी किफायत से यूज करना है और बर्बाद होने से भी बचाना चाहिए ।